पशुओं में लिवर-फ्लूक (छेरा रोग) बीमारी

पशुओं की यह एक परजीवी बीमारी है । यह बीमारी पशुओं में एक प्रकार के परजीवी (फैसिओला) से होती है जो अपने जीवन का कुछ समय नदी, जालाब, पोखर आदि में पाये जाने वाले घोंघा में व्यतीत करते हैं और शेष समय पशुओं के शरीर (यकृत) में । घोंघा से निकलकर इस परजीवी के अवयस्क लार्वा नदी, तालाब, पोखर के किनारे वाले घास की पत्तियों पर लटके रहते हैं । पशु जब इस घास के संपर्क में आते हैं तो यह परजीवी पशुओं के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं । शरीर के विभिन्न आंतरिक अंगों में भ्रमण करते हुए अंततः यह अपना स्थान पशु के यकृत तथा पीत की थैली में बना लेते हैं । पशुओं का यकृत जैसे–जैसे प्रभावित होता है, वैसे–वैसे रोग के लक्षण प्रकट होते हैं । बीमारी की तीव्रता यकृत के नुकसान की व्यापकता पर निर्भर करती है ।

लक्षण :

- भूख में कमी होना ।
- रोंए का भेगा–भींगा प्रतीती होना ।
- शरीर की क्षीण होते जाना ।
- कभी–कभी बदबूदार बुलबुले के साथ पतला दस्त ।
- घोघ फूल जाना ।
- उठने में कठनाई होना ।
- उत्पादन क्षमता का ह्वास होना ।
- उचित समय ईलाज न होने पर पशु की मृत्यु भी हो सकती है ।
- दवा सुबह भूखे / खाली पेट में खिलाई / पिलाई जानी चाहिए ।
- इस दवा का व्यवहार पशुओं के गर्भावस्था के दौरान भी बिना किसी विपरीत प्रभाव के किया जा सकता है ।
- साल में दो बार प्रत्येक बार में 15 दिनों के अंतर दो खुराक दवा का प्रयोग करना चाहिए ।
- पशु संसाधन विभाग की ओर से राज्य के पशु चिकित्सालयों में इस दवा की निःशुल्क व्यवस्था की जाती है ।
- बाढ़ प्रभावित तथा जल जमाव वाले क्षेत्रों के पशुपालकों को इस रोग से अधिक सतर्क रहने की ज़रूरत है ।

याद रखें :

''छेरा रोग की पहचान, अभी से चेतो है किसान'' क्या है लाभ करने से देर, जब चिड़िया चुग जाएगी खेत ।
इस बीमारी के लक्षण प्रकट होने पर तुरन्त नज़दीक के चिकित्सालय/पशु चिकित्स से संपर्क करें ।

****

****

भाकृअनुप
ICAR

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch

Published by :
Krishi Vigyan Kendra, Reasi
Directorate of Extension
Ph.: : 01991-287802; email: kvkreasi@gmail.com